शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ० प्रेम कुमारी श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग, डी०ए-वी० कालेज, कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of

खीरों ग्राम (बैसवारा क्षेत्र) का विलक्षण चित्रित मंदिर: बलभद्रेश्वर

-डॉ० प्रेम कुमारी श्रीवास्तव

भारत के संपूर्ण भाग में बिखरे ऐतिहासिक धरोहर भारतीय संस्कृति की पुरातनता के परिचायक हैं और वे प्रत्येक काल की विशेषताओं को आत्मसात् करते हुए अविछिन्न सांस्कतिक प्रवाह को आगे बढ़ाते हैं। रायबरेली का बलभद्रेश्वर मंदिर इस अर्थ में विलक्षण है कि इसके अंदर के भित्ति चित्र के रंगों की चमक लगभग २०० वर्षों के बाद भी वैसे ही बनी हुई है।

विषय संकेत:- बैसवारा, बलभद्रेश्वर मंदिर, भित्ति चित्र

बैसवाड़ा क्षेत्र को चित्रित मंदिरों का क्षेत्र कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। इस क्षेत्र में दो स्तर के मंदिर प्राप्त होते है:- 1- बैसवाड़ा क्षेत्र के ताल्लुकेदार द्वारा बनवाए हुए। 2- बैसवारा क्षेत्र के निवासियों द्वारा निर्मित कराये हुए। ताल्लुकेदारों द्वारा बनवाये गये मंदिरों का स्तर हर दृष्टि से (स्थापत्य कला, चित्रकला, भव्यता में) इस क्षेत्र के निवासियों द्वारा बनवाये गये मंदिरो से श्रेष्ठ है। खीरों ग्राम स्थित चित्रित मंदिर बलभद्रेश्वर के चित्रों में प्रयुक्त रंगों की रंगत विलक्षण है। चित्रों में प्रयुक्त प्राकृतिक रंगों में कलाकार ने बाइन्डर क रूप में क्या प्रयुक्त किया यह शोध का विषय है।

बेसर शैली में सवंत 1838[1] में निर्मित बलभद्रेश्वर मंदिर जनमानस के दृष्टिपटल से विस्मृत, अलग-थलग मनुष्य तथा प्रकृति द्वारा उत्पन्न विपरीत परिस्थितियों के मध्य आज भी जिला-रायबरेली, तहसील-लालगंज, ग्राम-खीरों में स्थित है। खीरों ग्राम को विकास-खण्ड तथा ग्राम पंचायत का दर्जा प्राप्त है। यह ग्राम रायबरेली से 38 कि0मी0 पश्चिम तथा डलमऊ से 35 कि0मी0 उत्तर-पश्चिम में स्थित है। यह क्षेत्र बैसवारा क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। ''बैसवारा क्षेत्र मुख्य रूप से बैस ठाकुरों द्वारा शासित रहा है। सन् 1837 ई0 में डॉ डोनाल्ड बटर द्वारा लिखित पुस्तक ''सदर्न डिस्ट्रिक्ट आफॅ अवध'' के अनुसार बैसवारा क्षेत्र अवध साम्राज्य का एक चकला था। तब बैसवारा क्षेत्र लखनऊ, बाराबंकी, हरदोई, उन्नाव, प्रतापगढ़ के क्षेत्रों में फैला हुआ था। सन् 1857 की क्रान्ति के बाद क्रान्ति काल में इस क्षेत्र के लोगो की सशक्त भूमिका देख अंग्रेजों ने बैसवारा क्षेत्र को उन्नाव, रायबरेली, हरदोई, बाराबंकी जिले में बाँट दिया।[2] यद्यपि इस भू-भाग की कोई प्रशासनिक एवं भौगोलिक सीमा रेखा निर्धारित नहीं हो पाई है, लेकिन सांस्कृतिक एवं साहित्यिक दृष्टि से इसे गंगा, लोन एवं सई नदी का मध्यवर्ती क्षेत्र माना जाता है, जो मुख्यत: रायबरेली, उन्नाव जिला में तथा गौण रूप से बाराबंकी, लखनऊ एवं फतेहपुर के 22 परगने में परिव्याप्त है।[3 एवं 4]

खीरों ग्राम के मध्य स्थित बलभद्रेश्वर मंदिर कला का अद्भुत, किन्तु उपेक्षित नमूना है। मंदिर की आन्तरिक भित्तियाँ शिखर के ऊपरी भाग से नीचे जंघा के मध्य तक चित्रित है, जिसमें प्रयुक्त रंग आज भी दीप्यमान है। देख-रेख के अभाव में मंदिर बाहर से टूटने लगा है तथा अन्दर भी कहीं-कहीं रंग की पपड़ियाँ निकल गई है। इस मंदिर की स्थापना यहाँ के ताल्लुकेदार बलभद्र सिंह ने की थी, पर वे मंदिर पूरा होने से पहले चल बसे, अत: मंदिर के शेष भाग का निर्माण उनकी पत्नी बिट्टन कुँवर ने करवाया था। बिट्टन कुँवर सिहं की कोई संतान नही थी। उन्होने परिवार के सदस्य चौधरीयदुनाथ सिहं (पुत्र औकल सिंह) को गोद लिया था। अब उनकी चौथी पीढ़ी रामपाल सिहं की पत्नी मध्य वर्ग की तरह इस मंदिर से थोड़ी दूरी पर निवास करती है, जिनकी दो बेटियाँ व एक पुत्र है, पर मंदिर की देखभाल करने वाला कोई नही है।

बलभद्रेश्वर मंदिर लगभग आठ फुट ऊँचें वेदिबन्ध पर स्थापित है। वेदिबन्ध का चबूतरा काफी बड़ा है, जिसके चारों कोने पर छोटे-छोटे गुम्बदाकार मंदिर स्थापित है। प्रत्येक गुम्बदाकार मंदिर में क्रमश: गणेश जी, कालभैरव, हनुमान जी एवं काली जी की मूर्ति स्थापित है। लगभग चार फुट ऊँची रेलिंग चारों ओर निर्मित है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

खीरों ग्राम (बैसवारा क्षेत्र) का विलक्षण चित्रित मंदिरः बलभद्रेश्वर

डॉ० प्रेम कुमारी श्रीवास्तव

एसोसिऐट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग, डी०ए-वी० कालेज, कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of

मुख्य मंदिर चबूतरे के मध्य स्थित है। मंदिर का शिखर अनेक उरूश्रृंगों से सुसज्जित शंक्वाकार है। उसके ऊपरी भाग में कलश एवं अमलालक तथा सबसे ऊपर लगा त्रिशूल इस मंदिर के शिव मंदिर होने का संकेत देता है। शिखर से नीचे अष्ठ फलक युक्त जंघा भाग में कार्विग कर डिजाइन युक्त आले बनाये गये है। मंदिर में उस समय प्रचलित विशेष प्रकार का प्लास्टर प्रयुक्त किया गया है, जो अत्यधिक चिकना क्रीम कलर का पत्थर जैसा होने का संकेत देता है। देख-रेख के अभाव में अब यह जगह-जगह काला पड़ने लगा है। मंदिर का आन्तरिक भाग ऊपर से नीचे जंघा के मध्य भाग तक चित्रित है। शिखर के मध्य में ऊपर छोटे वृत्तकार रूप में आलेखन बना है, जिसके चारों ओर बड़ा वृत्त बनाकर उसके अन्दर चर्तुदिक ''कृष्ण गोपिकाओं का रास'' विषय चित्रित किया गया है। रास विषय से नीचे दो वत्त का बार्डर बनाकर उसके अन्दर नीले धरातल पर सफेद एवं गेरू रंग से आलेखन बनाया गया है। वृत्त से नीचे शिखर को 16 पंखुड़ियों में विभाजित कर उसके अन्दर चित्रण किया गया है। सभी पंखुड़ियों में ऊपर की ओर विभिन्न प्रकार के पुष्प चित्रित है, उससे नीचे प्रत्येक पंखुड़ी में अलग-अलग विषय जैसे- राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, मगरों के मध्य गंगा, दोनों हाथों से राम-लक्ष्मण-सीता की चौकी उठाये हनुमान, कृष्ण द्वारा गोपिकाओं का चीर-हरण, गोपिकाओं के साथ कृष्ण तथा गायें, कृष्ण को गोद लिये यशोदा पास खड़े बलराम एवं गोपिकायें, खड़े लक्ष्मी-गणेश, कृष्ण गोपियाँ, ऊपर पर्वत उठाये हनुमान, नीचे गज का उद्धार करते कृष्ण, शिव-पार्वती, कृष्ण एवं नृत्यरत सर्प कन्या, राम-लक्ष्मण, कन्धो पर राम-लक्ष्मण को बैठाये हनुमान, सर्पशैया पर लेटे विष्णु एवं बैठी लक्ष्मी, ऊपर कमलासन पर विराजमान ब्रह्मा, राक्षस के ऊपर खड़ी काली, विषय चित्रित हैं। पंखुड़ियों के बाहर शिखर के निचले भाग में बार्डर की तरह दो वृत्त निर्मित है, जिसमें चारों ओर 16 आले के आकार बराबर दूरी पर निर्मित है। आले के मध्य आलेखन युक्त उभरे हुऐ खम्भ निर्मित है। खम्भ और आले के मध्य दोनों ओर मानवाकृति चित्रित है। प्रथम आले के मध्य हिरण्य कश्यप वध और बाहर दोनो ओर पीताम्बरधारी दरबारी पुरुषाकृति चित्रित है। दूसरे आले में विष्णु जी का वराहावतार और बाहर राजपुरुष, तीसरे आले में अमृत मंथन एवं आले के बाहर दोनों ओर राजपरुष, चौथे आले में विष्णु का मत्स्यावतार तथा आले के बाहर दोनों ओर राज दरबारी, पाँचवें आले में बैठे कृष्ण एवं आले के बाहर हस्त में वाद्ययन्त्र पकड़े दरबारी, छठें आले में शिव का भैरव रूप एवं आले के दोनों ओर दरबान, सातवें आले में कमल पर विराजमान लक्ष्मी तथा आले के दोनो ओर चॅवर डुलाते दरबारी, आठवें आले में बकासुर वध तथा आले के दोनों ओर दरबारी, नवें आले में सिंह सवार दुर्गा तथा आले के बाहर किनारे पर वाद्य यन्त्र बजाते दरबारी, दसवें आले में गजलक्ष्मी एवं आले का बाहर पुस्तक लिए दरबारी, ग्यारहवं आले में अश्व को पकड़े लव तथा आले के दोनो ओर दरबारी पंडित, बारहवें आले में जगन्नाथ-बलराम-सुभद्रा तथा आले के बाहर दोनो ओर चवंर

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

खीरों ग्राम (बैसवारा क्षेत्र) का विलक्षण चित्रित मंदिरः बलभद्रेश्वर

डॉ० प्रेम कुमारी श्रीवास्तव

एसोसिऐट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग, डी०ए-वी० कालेज, कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of

डुलाते दरबारी दास, तेरहवें आले में कृष्ण द्वारा कलिया नाग को वश में करने का प्रकरण तथा आले के बाहर वाद्ययन्त्र लिये दरबारी, चौदहवें आले में युद्धरत् राम-लक्ष्मण रावण तथा आले के बाहर चँवर लिये दरबारी, पन्द्रहवें आले में दुर्गा का महिषा सुरमर्दनी रूप और सोलहवें आले में वामन रूप में विष्णु का सत्कार करते हुए सपत्नी राजाबली एवं आले के बाहर दोनों ओर दरबारी का चित्रण है। बार्डर को ऊपर नीचे आलेखन से सुसज्जित किया गया है।

शिखर से नीचे मंदिर की वाराण्डिका अष्टभुजी है, जिसका प्रत्येक फलक आलेखन युक्त खम्भों से विभाजित है। प्रत्येक खम्भ रंगों से सुसज्जित, उभरे अर्द्धचन्द्राकार रेखा द्वारा ऊपर से जुड़ा हुआ है। हर फलक के अन्दर त्रिस्तरीय आले बने हुए है। अन्दर आले में विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्ति स्थापित है। आले के बाहर दूसरे तीसरे स्तर पर चारों ओर आलेखन बना है। प्रत्येक फलक के आले के दोनों किनारों पर मानवाकृति चित्रित है जैसे- पूर्वी फलक पर दोनों ओर पीत वस्त्रधारी पुरुष, पूर्वी-दक्षिणी दीवार पर दोनों ओर चँवर डुलाते पुरुषाकृति, दक्षिणी फलक पर फल बेचने वाली स्त्री, दक्षिणी-पश्चिमी दीवार पर माला जपते पुरुष, पश्चिमी पदीवार पर वाद्ययन्त्र बजाती स्त्रियाँ, पश्चिमी-उत्तरी दीवार पर दोनों ओर चवॅर डुलाते पुरुष, उत्तरी दीवार पर फल विक्रय करने वाली स्त्री, उत्तरी-पूर्वी दीवार पर दोनों ओर वाद्ययन्त्र बजाती स्त्री का चित्रण है।

मंदिर का जंघा भाग अष्ठ फलक वाला है। उससे नीचे चारों ओर सभी फलक पर उभार युक्त पैनल बना है, जिस पर हल्के पीले (सुनहरे) रंग के धरातल पर रूपहले रंग से पत्ती बनाकर उसको हरे रंग की रेखाओं से सुसज्जित किया गया है। वाराण्डिका से नीचे जंघा के प्रत्येक फलक पर अलग-अलग रंग के धरातल पर आयत में फूल पत्ती द्वारा आलेखन चित्रित है। उससे नीचे प्रत्येक फलक में मेहराबदार आले के ऊपर अलग-अलग रंग से धरातल पर फूल पत्ती आकार को संयोजित करके आयत बनाया गया है, जो मुगल कलम की याद दिलाता है। मंदिर में चित्रित सभी आकृतियाँ सिद्धहस्त कलाकारों द्वारा बनायी गयी हैं।

बैसवारा क्षेत्र में निर्मित ज्यादातर मंदिरो में लाल रंगत के लिये गेरू, पीले रंगत के लिये रामरज, नीली रंगत के लिये नील, सफेद रंगत के लिये चूने का प्रयोग किया गया है। खीरों ग्राम स्थित बलभद्रेश्वर मंदिर एक मात्र ऐसा मंदिर है, जिसमें रूपहले एवं सुनहरे रंग प्रयुक्त हुये हैं तथा लाल रंगत के लिये हिंगूल तथा गेरू, पीली रंगत के लिये गऊगोली तथा रामरज, नीली रंगत के लिये लेपिसजुली एवं नील का प्रयोग किया गया है, तथा इन रंगों का मिश्रित रंग भी चित्र में प्रयुक्त हुआ है। **इस मंदिर में प्रयुक्त रंगों की चमक आज लगभग 200 वर्ष बाद जरा भी मद्धिम नही हुई है। यहाँ के कलाकारों ने प्राकृतिक रंग में क्या बाइन्डर अथवा कितनी मात्रा में मिलाया कि इन रंगों की रंगत आज भी नए रंग की तरह है।**

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

डॉ० प्रेम कुमारी श्रीवास्तव

एसोसिऐट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग, डी०ए-वी० कालेज, कानपुर

मंदिर में चित्रित आकृतियाँ राजस्थानी शैली की तरह भाव पूर्ण है। दरबारी, फल बेचने वाली, पंडित, वाद्ययन्त्र बजाने वाली, चँवर डुलाने वाला परिचारक, सभी की वेशभूषा बैसवाड़ा क्षेत्र की न होकर राजस्थान क्षेत्र की है, जो प्रदर्शित करता है कि चित्र निर्माता कहीं न कहीं राजस्थान से जुड़ा है। चित्र में निर्मित रेखा तथा रूप चित्रकार की सिद्धहस्तता को प्रदर्शित करते है। भारतीय चित्रकारो के बारे में परसीब्राउन का कथन- ''इतने अल्प विवरणों से भारतीय चित्रकरों के बारे में कोई जानकारी नही मिलती। बौद्ध, राजपूत या मुगल चित्रकार इतिहास के पृष्ठों में रहस्यमयी प्राणी ही रहता है। केवल उनके चित्र यह सिद्ध करने के लिये शेष है कि वे साधारण व्यक्ति नहीं थे अपने काम में डूबे रहते थे ---------- कुल मिलाकर भारतीय कला नामहीन कला है।''[5] बलभद्रेश्वर मंदिर के चित्रकारों पर सटीक बैठती है। मंदिर का निर्माण एवं चित्रण किसने किया, वो कलाकार कहाँ से आये थे, किसी को इसकी जानकारी नही है। साधारण से कस्बे में निर्मित इस मंदिर का वास्तु एवं उसमें निर्मित चित्र उत्तर प्रदेश की एक प्राचीन धरोहर है। इस प्राचीन धरोहर के रख-रखाव, समुचित संरक्षण से इसे पर्यटन एवं धार्मिक केन्द्र के रूप में विकसित किया जा सकता है, जिससे इस क्षेत्र का विकास तथा जनमानस की आर्थिक दशा में सुधार की बृहद सम्भावनाएँ हैं। इसी के साथ इन अमूल्य कलाकृतियों का परिचय कला मर्मज्ञों से भी हो सकेगा।

संदर्भ :-

1. मंदिर में लगे शिलापट्टिका के आधार पर।
2. उन्नाव की काव्य-साधना (संदर्भ ग्रन्थ), आचमन की साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, उन्नाव-पृष्ठ संख्या-13
3. दीक्षित, डॉ0 सूर्य प्रसाद, 'अवधी लोक वाङगमय', पृष्ठ सं-1
4. सिहं, डॉ0 वासुदेव, 'बैसवाड़ा का इतिहास', पृष्ठ संख्या- 10
5. परसीब्राउन, इण्डियन पेण्टिंग पृष्ठ संख्या-11